



संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : जुलाई (प्रथम)



राजनीतिक परिवर्तन का नया सूर्योदय

ज्योतिराव गोविंदराव

अज्ञानता बुद्धिजीवी होने की निशानी नहीं है। सनातनी संस्कार के कारण अक्सर हिन्दुओं (हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, जैन) के मुँह से सुनते हैं सभी धर्म एक समान है। सभी धर्म प्यार, मोहब्बत और इंसानियत की शिक्षा देते हैं। कोई भी धर्म हिंसा नहीं सिखाता, आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। अल्लाह, ईश्वर, गॉड सब एक है आदि।

ऐसा वही लोग कहते हैं जो सच्चाई से अनभिज्ञ होते हैं। जिन्हें इसाईयत और इस्लाम का इतिहास पता नहीं होता है। जो अरब और यूरोप का इतिहास नहीं जानते हैं और जिन्होंने कुरान और हदीस नहीं पढ़ा है। अगर वे पढ़े होते कि यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका में इसाईयत कैसे फैलाया अरब, मध्य एशिया और भारतवर्ष में इस्लाम कैसे फैलाया गया या उन्हें यह बात बताया गया होता तो वे मूर्खों की तरह वैसी बातें नहीं करते। इतिहास छोड़िये, अगर उन्हें वर्तमान वैश्विक घटनाओं की जानकारी होती तो भी शायद वे ऐसा नहीं कहते। ऐसे लोगों को कम से कम इस्लाम और इसाईयत का संक्षिप्त इतिहास निचे के लिंक पर पढ़ लेना चाहिए।

मेरा मानना है ज्योतिराव गोविंदराव फुले भी ऐसे ही बुद्धिजीवी और समाज सुधारक थे जो सत्य से सर्वथा अनभिज्ञ, इसाईयत और इस्लाम की सच्चाई और इतिहास से बिलकुल अज्ञान, अपनी अज्ञानता को ही बुद्धिजीविता का पर्याय मानकर आत्ममुग्ध थे। वे पूर्वाग्रह से ग्रस्त अपनी सोच को ही सच्चाई और इतिहास मान बैठे थे जिसका भयानक दुष्परिणाम पाकिस्तान, बांग्लादेश सहित अवशेष भारत के दलित हिन्दुओं, बौद्धों को भी भुगतना पड़ा और अभी भी भुगत रहे हैं। इस विषय पर हम विस्तार से आगे चर्चा करेंगे पहले उनका परिचय और उनके सामाजिक, धार्मिक और राजनितिक विचारों को जानना जरूरी है।



ज्योतिराव गोविंदराव फुले का जन्म 11 अप्रैल सन् 1827 को पुणे में हुआ था। कोल्हापुर के पास ही एक पहाड़ी पर देवता ज्योतिबा का मंदिर है। इन्हें जोतबा भी कहते हैं। यह हिन्दू धर्मावलंबियों का पवित्र तीर्थ है। वस्तुतः भगवान शिव के तीनों स्वरूपों को ज्योतिबा (जोतिबा) देवता के नाम से अभिव्यक्त किया गया है। ये बहुत से मराठों के कुल देवता हैं।

जिस दिन फुले का जन्म हुआ उस दिन जोतबा देवता का उत्सव था इसलिए उनका नाम जोतिबा रखा गया। उनके पिता का नाम गोविंद राव फुले, माता का नाम विमला बाई एवं धर्मपत्नी का नाम सावित्री बाई फुले था। वे 19वीं सदी का महान समाज सेवक एवं सुधारक माने जाते हैं। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कई विसंगतियों को दूर करने के लिए सतत् संघर्ष किया। ईसाईयों ने ज्योतिबा फुले को धर्मांतरण के लिए उकसाया और अपने साँचे में ढालने का प्रयास किया परंतु उन्होंने ईसाई मत ग्रहण किया था इसका कोई प्रमाण नहीं है।



संवाद दर्शन

हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्य अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbhar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbhar.com



पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई-मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!

अनुक्रमणिका

फूट डालो और राज करो

1857 की स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई ने भारत में ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी थी। अंग्रेजों को अपनी सत्ता क्या जान पर भी खतरा महसूस होने लगा था। ऐसी समस्या दुबारा उत्पन्न न हो इसके लिए अंग्रेजों ने फूट डालो राज करो की नीति अपनाई। अंग्रेजों को लगा कि हिन्दू भारत में अंग्रेजों की सत्ता कभी स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए उन्होंने अपने जैसे ही विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों के वंशज मुसलमानों को अपने पक्ष में कर 1857 की हिन्दू मुस्लिम एकता को भंग करने की रणनीति बनाई।

उसके बाद सैय्यद अहमद खान ने अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयध्विश्वविद्यालय में मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध नफरत का बीज भरना शुरू किया। उसने हिन्दू मुसलमान को सिर्फ दो कौम ही नहीं दो अलग राष्ट्र कहना शुरू कर दिया और कहने लगा “यदि अंग्रेजों से देश आजाद हो गया तो सत्ता हिन्दुओं के हाथों में आ जायेगा और मुसलमानों को उनकी गुलामी में जीना पड़ेगा। इसलिए मुसलमानों को अंग्रेजी हुकूमत का समर्थन करना चाहिए”। इतना ही नहीं 1887 में उसने कहा कि “1857 के स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों ने ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध हिस्सा नहीं लिया था, यह हिन्दुओं की लड़ाई थी।” उसके बाद 1888 में उसे ब्रिटिश हुकूमत की तरफ से ‘सर’ की उपाधि दी गई।

हिन्दू मुस्लिम के बीच खाई खोदकर अंग्रेजों ने हिन्दुओं की एकजुटता भंग करने के लिए आर्य, द्रविड़ जैसे दो फर्जी जाति समूहों का निर्माण कर भारतियों को उत्तर दक्षिण के हिन्दुओं में न केवल बांटा बल्कि अपने सत्ता को वैध ठहराने के लिए आर्यों अर्थात् उत्तर भारतियों को विदेशी और अपने ही देश पर आक्रमणकारी घोषित कर दिया।



दक्षिण भारत में उत्तर भारत और दक्षिण भारत के हिन्दुओं को आपस में लड़ाने और खाई पैदा करने के लिए उसने अंग्रेज और ईसाई भक्त ई वी रामास्वामी को अपना मुहरा बनाया और वह अंग्रेजों की फूट डालो राज करो की नीति को आगे बढ़ाने के लिए उत्तर भारतियों के विरुद्ध जहर उगलने लगा। उसने सनातन धर्म को विदेशी आर्यों का धर्म बताकर नफरत फैलाया और दक्षिण भारत के लोगों को समझाया की अगर अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये तो दक्षिण भारतीय मूलनिवासी (गैर ब्राह्मण द्रविड़) उत्तर भारतीय विदेशी आर्यों के अधीन हो जायेंगे। इसलिए उसने ब्रिटिश राज को भारत में स्थायी बनाने की बात की और भारत को आजाद करने की सूत्र में दक्षिण भारतियों के लिए अलग द्रविड़स्थान बनाने की मांग की।

इतना ही नहीं अंग्रेजों ने फूट डालो राज करो की नीति के तहत मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए ही मुस्लिम लीग का स्थापना कराया, मारले मिन्टो सुधार लाया आदि। वहीं हिन्दुओं को जाति और ऊँच नीच के आधार पर बांटकर कमजोर करने के लिए अछूत वर्ग का भी अविष्कार किया। भारतीय समाज में संक्रामक कार्य करने वाले लोगों, जैसे चमड़े का काम, मुर्दा जलाने का काम, सूअर पालने का काम, मुगलों के समय मल मूत्र साफ करने का काम आदि, को स्वास्थ्य की वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गाँव के बाहरी हिस्से में बसने की व्यवस्था थी ताकि गाँव में संक्रमण नहीं फैले। ये अछूत नहीं थे।

ये गाँव के बाजार में आकर अपना चप्पल जूते का दुकान, लगाते थे, ढोल बाजे का काम करते थेय सूप, दौड़ी, बट्टा आदि बनाकर बेचते थे। इन्हीं लोगों को अंग्रेजों ने अछूत कहा।

फिर मुस्लिम और अंग्रेजी शासन में लूट, अत्याचार से दरिद्र बने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जातियों को अनुसूचित जाति में सूचित कर ऊँच नीच जातियों का अविष्कार किया। इससे भी घृणित बात यह हुई कि इन सभी अनुसूचित जातियों को क्षत्रियों और ब्राह्मण द्वारा शोषित, पीड़ित और वंचित घोषित कर हिन्दुओं को आपस में लड़ाने लगे।

मध्य भारत और उत्तर भारत के हिन्दुओं को आपस में लड़ाने के लिए अंग्रेजों का मोहरा क्रमशः वैसे ही अंग्रेजी पढ़े लिखे अंग्रेज, ब्रिटिश शासन और ईसाई धर्म के दीवाने, सनातन धर्म के घोर विरोधी ज्योतिराव गोविंदराव फुले और डॉ भीमराव रामजी आंबेडकर बने। वे हिन्दुओं को शूद्र, ब्राह्मण, दलित सवर्ण के नाम पर मतभेद पैदा कर, कमजोर कर ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूत करने लगे। पूरा भारत जब अंग्रेजों के कम्युनल अवार्ड का विरोध कर रहे थे तब ब्रिटिश सरकार के राजनिष्ठ अधिकारी डॉ आंबेडकर कम्युनल अवार्ड का समर्थन कर रहे थे।

ये दोनों भी भारत में ब्रिटिश राज के समर्थक थे। इन दोनों ने समस्त अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को ही ब्रिटिश षडयंत्र के तहत अछूत और दलित घोषित कर दिया। इन्होंने भी उन तथाकथित अछूतों और दलितों को समझाया कि ब्रिटिश शासन उनके लिए अच्छा है। अगर ब्रिटिश शासन नहीं रहेगा तो वे हिन्दुओं के गुलाम बनकर रहने को बाध्य हो जायेंगे। आंबेडकर ने तो दावा किया की भारत में ब्रिटिश सरकार को सत्ता में लाने में दलितों का बहुत बड़ा योगदान है।



उन्होंने भी आजादी का विरोध किया था और आजादी की सूरत में दलितों के लिए अलग दलितस्थान की मांग की।

उपर्युक्त तो केवल झलक है। गम्भीरता से तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि सैय्यद अहमद खान, दक्षिण में ई वी रामास्वामी पेरियार, मध्य भारत में ज्योतिबा फुले और उत्तर भारत में डॉ भीमराव आंबेडकर चारों अंग्रेजों के एक ही टूलकिट पर काम कर रहे थे, चारों का कार्यप्रणाली एक सा था, चारों का लक्ष्य और उद्देश्य भी एक था। सबसे दुखद और आश्चर्य की बात यह है कि रामास्वामी पेरियार, ज्योतिबा फुले और भीमराव आंबेडकर ने ब्रिटिश शासन में अंग्रेजों की लूट, हिंसा, अत्याचार और भारतियों के नरसंहार पर एक शब्द भी नहीं कहा (फुले ने सिर्फ दुर्भिक्ष के समय अंग्रेजों की नीति की आलोचना की थी)।

200 वर्षों के अंग्रेजी सरकार के लूट और कुशासन ने भारत की अर्थव्यवस्था चौपट कर दिया था. लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, बुनकर उद्योग, रेशम उद्योग, कॉटन उद्योग, सिलाई उद्योग आदि तमाम उद्योग धंधे बंद करवा दिए और भारत को विदेशी माल का बाजार मात्र बनाकर रख दिया गया। लोगों का धंधा चौपट हो गया, लोग बेरोजगार हो गये, लोग खाने पीने को मुहताज हो गये।

हिन्दू शब्द की उत्पत्ति

साम्राज्यवादी एवं वामपंथी इतिहासकारों के अनुसार हिन्दू शब्द की उत्पत्ति सिन्धु से हुई है और उसी से हिन्द और हिंदुस्तान बना है। और ऐसा इसलिए की फारसधर्षियाध्वरान के लोग स का उच्चारण ह करते थे। इसमें ईरानी का ईक प्रत्यय लगाने से हिन्दीक शब्द बना जिसका अर्थ 'हिन्द का' है। यूनानी इंदिका या यूरोपियन इंडिया आदि इसी हिन्दीक शब्द से ही बने हैं।

परन्तु साम्राज्यवादी इतिहास भारत की गौरवशाली प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, परम्परा और इतिहास की अवहेलना तथा ईसाई मत, कि सृष्टि का निर्माण सिर्फ ४००४ ईस्वी पूर्व हुआ था, जैसे दोषों से युक्त होने के कारण विश्वसनीय नहीं है। भारत के वामपंथीध्वनेहरूवादी इतिहासकार और पश्चिमी इतिहासकार अंग्रेजों द्वारा लिखित इसी दोषपूर्ण इतिहास का अन्धानुकरण करते हैं इसलिए इनके द्वारा लिखित इतिहास कतई विश्वसनीय नहीं है। भारतीय वामपंथी इतिहासकारों का एक दोष और है कि वे सत्य का शोध करने की जगह रटे रटायें इतिहास को ही इस्लामिक चासनी में लपेटकर पड़ोसते रहते हैं। इनके द्वारा लिखित इतिहास केवल दोषपूर्ण ही नहीं बल्कि फर्जी और मनगढ़ंत होता है, इसलिए ये पूरी तरह अपनी विश्वसनीयता खो चुके हैं। आइये जानते हैं हिन्द और हिन्दू शब्द की उत्पत्ति पर विभिन्न शोधपरक इतिहास क्या कहता है।

कुछ इतिहासकार हिन्दू और हिन्द शब्द की उत्पत्ति भारतवर्ष का प्राचीन नाम 'इंदु' अर्थात् चन्द्रमा शब्द से मानते हैं। उनका मानना है कि हिन्दू शब्द सिन्धु से नहीं इन्दु (चन्द्रमा) से बना है। यूरोपीय लोग हिन्दू को इन्दु ही कहते थे और हिन्दुओं के देश को इंदीय (चन्द्रमा के समान) अपभ्रंश इंडिया कहते थे। चीनी यात्री हुवेन्त्संग ने लिखा है, "भारत के कई नाम हैं। प्राचीनकाल में

भारत को शितु और हिनाऊ कहते थे किन्तु उसका सही उच्चार इन्दु है। उस नाम के प्रति बड़ा आदरभाव है।

उस देश का नाम इन्दु इसलिए है कि उस देश के विद्वानों ने अपने शीतल, धवल ज्ञानप्रकाश से चन्द्रमा जैसे ही सारे विश्व को उजागर किया।"

हिमालयात् समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्। तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थान प्रचक्षते ॥

अर्थात् — हिमालय से प्रारंभ होकर इन्दु सरोवर (हिन्द महासागर) तक यह देव निर्मित देश हिन्दुस्थान कहलाता है।

यहां भी हिन्द के लिए इंदु शब्द का प्रयोग हुआ है। अतः इससे और हुएन्त्संग के विवरण से इतना तो स्पष्ट है कि भारत का एक नाम इंदु भी था और भारतीय इंदु शब्द का उच्चारण बड़े आदरभाव से करते थे।

अलबरूनी के ग्रन्थ से भी लगता है सिन्धु और हिन्दू शब्द दो अलग उच्चार है। अलबरूनी ने लिखा है कि उसके प्रदेश से "सिंध में जाने के लिए हिमरोझ उर्फ सिजिस्थान से होकर जाना पड़ता है किन्तु यदि हिन्द में पहुंचना हो तो काबुल होकर जाना पड़ता है।"

उपर्युक्त से स्पष्ट है सिन्धु और हिन्दू दो अलग शब्द हैं। सिन्धु से हिन्दू नहीं बना है बल्कि भारत का एक प्राचीन नाम इंदु था और इंदु से ही हिन्दू शब्द बना है।





गाँव और ग्रामीण जीवन

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना आजादी के समय था। गाँव सिर्फ कुछ घरों का समूह नहीं होते, बल्कि वे हमारी संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं के उद्गम स्थल हैं। जहाँ शहरों की पहचान गगनचुंबी इमारतों, कंक्रीट के जंगलों और मशीनी जिंदगी से होती है, वहीं गाँव अपनी सादगी, प्राकृतिक सुंदरता और अपनत्व के लिए जाने जाते हैं। शगाँव—घरश शब्द सुनते ही मन में हरे-भरे खेत, लहलाती फसलें, मिट्टी की सोंधी खुशबू और पक्षियों की चहचहाहट का चित्र उभर आता है।

गाँव का सबसे बड़ा आकर्षण वहाँ का प्रदूषण मुक्त और शांत वातावरण है। शहरों की तरह यहाँ न तो वाहनों का शोर होता है और न ही फैक्ट्रियों से निकलने वाला जहरीला धुआँ। भोर का दृश्य गाँवों में सुबह की शुरुआत चिड़ियों के कलरव और मंदिर की घंटियों से होती है। सूर्योदय का दृश्य यहाँ अत्यंत मनोरम होता है। शुद्ध हवा और जलरू यहाँ की हवा शुद्ध और ताजी होती है, जो स्वास्थ्य के लिए अमृत समान है। कुओं, तालाबों और नदियों का पानी आज भी कई गाँवों की रौनक बढ़ाता है। ऋतुओं का रंग—

प्रकृति का वास्तविक रूप गाँवों में ही देखने को मिलता है। सावन में रिमझिम बारिश, ठंड में कोहरे की चादर और वसंत में सरसों के पीले फूल गाँव को किसी स्वर्ग जैसा बना देते हैं।

गाँव की सबसे बड़ी ताकत वहाँ का आपसी भाईचारा और सामाजिक एकता है। शहरों में जहाँ लोग अपने पड़ोसियों तक को नहीं जानते, वहीं गाँव में पूरा गाँव एक परिवार की तरह रहता है। सुख—दुख में सहभागितारू किसी एक के घर में शादी हो या कोई विपत्ति आए, पूरा गाँव बिना बुलाए मदद के लिए खड़ा हो जाता है। सामूहिक निर्णयरू आज भी कई मामलों का निपटारा गाँव के बुजुर्ग चौपाल पर बैठकर आपसी सहमति से कर लेते हैं। रिश्तों की अहमियतरू गाँव में उम्र का लिहाज और रिश्तों की मर्यादा सर्वोपरि होती है। बच्चे पूरे गाँव के बुजुर्गों को दादा—दादी या चाचा—चाची कहकर संबोधित करते हैं।

भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का श्रेय हमारे गाँवों को ही जाता है। यहाँ के त्योहारों और उत्सवों में जो जीवंतता होती है, वह शहरों में दुर्लभ है। त्योहारों का उल्लासरू होली, दिवाली, छठ, पोंगल, बैसाखी और ईद जैसे त्योहार गाँवों में

पूरे पारंपरिक तरीके से मनाए जाते हैं। सामूहिक रूप से लोकगीत गाना और नाचना इन त्योहारों की रौनक बढ़ा देता है। मेले और हाटरू गाँव के मेले बच्चों और बड़ों के लिए मनोरंजन का मुख्य साधन होते हैं। यहाँ मिट्टी के खिलौने, मिठाइयाँ और हस्तशिल्प की वस्तुएँ मिलती हैं, जो हमारी लोक कला को जीवित रखती हैं। सात्विक भोजनरू गाँव का खान-पान पूरी तरह शुद्ध और पौष्टिक होता है। चूल्हे पर बनी मक्के की रोटी, सरसों का साग, दूध, घी, मट्ठा और कुएं का ठंडा पानी सेहत का असली राज है।

गाँव की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से प्रकृति और कृषि पर निर्भर करती है। किसान को श्रमदान कहा जाता है क्योंकि वह दिन-रात कड़ी मेहनत करके पूरे देश का पेट भरता है। कड़ी मेहनतरू भीषण गर्मी हो, कड़कड़ाती ठंड हो या मूसलाधार बारिश, किसान खेतों में काम करता नजर आता है। पशुपालनरू गाय, भैंस, बैल और बकरियों का पालन ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह न केवल आय का साधन है बल्कि खेती में भी मददगार होता है। कुटीर उद्योगरू मिट्टी के बर्तन बनाना, टोकरी बुनना, बुनाई और सिलाई जैसे छोटे उद्योग भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देते हैं।

समय के साथ भारत के गाँवों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। आज का गाँव कल जैसा पिछड़ा नहीं रहा। तकनीक का प्रवेशरू अब किसानों के हाथों में स्मार्टफोन हैं। वे मौसम की जानकारी, फसलों के दाम और खेती के नए तरीके इंटरनेट के माध्यम से सीख रहे हैं। बुनियादी ढांचारू प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना जैसी योजनाओं से गाँव शहरों से जुड़ चुके हैं। बिजली, पानी और पक्के मकानों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। शिक्षा और स्वास्थ्यरू गाँवों में अब सरकारी और निजी स्कूल खुल गए हैं। लड़कियाँ भी अब उच्च शिक्षा के लिए बाहर जा रही हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से चिकित्सा सुविधाएं बेहतर हुई हैं।

रोजगार का अभावरू खेती अब उतनी मुनाफेदार नहीं रही, और गाँव में उद्योगों की कमी है। इस वजह से युवाओं का शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन (डपहतंजपवद) हो रहा है। मौसम पर निर्भरतारू आज भी सिंचाई के पुख्ता इंतजाम न होने के कारण किसान मॉनसून पर निर्भर हैं। सूखा या बाढ़ आने पर पूरी फसल बर्बाद हो जाती है, जिससे किसान कर्ज के जाल में फंस जाते हैं। उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य की कमीरू प्राथमिक स्तर की शिक्षा तो मिल जाती है, लेकिन उच्च शिक्षा और तकनीकी पढ़ाई के लिए युवाओं को शहर ही जाना पड़ता है। गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए आज भी अच्छे अस्पतालों की कमी है। रुढ़िवादितारू कुछ ग्रामीण इलाकों में आज भी जातिवाद, अंधविश्वास और जेंडर असमानता जैसी कुरीतियाँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं।

ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा— गाँवों में ही फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स और कुटीर उद्योगों की स्थापना की जानी चाहिए ताकि युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार मिल सके। आधुनिक कृषि पद्धतियाँरू किसानों को जैविक खेती (व्दहंदपब थंतउपदह), ड्रिप सिंचाई और उन्नत बीजों के प्रति जागरूक करना होगा। डिजिटल साक्षरतारू ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट बैंकिंग और डिजिटल सेवाओं का दायरा और बढ़ाना होगा।

गाँव केवल मिट्टी और गारे के घर नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की बुनियाद हैं। शहर हमें आजीविका दे सकते हैं, लेकिन मानसिक शांति और जीवन के असली मूल्य हमें गाँव ही सिखाते हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम गाँव की सादगी और पर्यावरण को बचाए रखते हुए वहाँ आधुनिक सुविधाएं पहुँचाएँ। जब हमारे गाँव समृद्ध, शिक्षित और स्वस्थ होंगे, तभी सच्चे अर्थों में एक सशक्त भारत का निर्माण होगा। हमें अपने शगाँव-घरश की मिट्टी का सम्मान करना चाहिए और उसकी प्रगति में अपना योगदान देना चाहिए।

स से सिनेमा

सिनेमा आधुनिक युग का सबसे सशक्त, लोकप्रिय और प्रभावशाली माध्यम है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि कला, तकनीक, साहित्य और समाज का एक अनूठा संगम है। सिनेमा को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि यह समाज में घटने वाली घटनाओं, मानवीय संवेदनाओं, कुरीतियों और बदलावों को पर्दे पर जीवंत करता है। श्लूमियर भाइयों द्वारा 19वीं सदी के अंत में शुरू हुआ यह सफर आज एक वैश्विक उद्योग बन चुका है। भारत में सिनेमा का इतिहास एक सदी से भी अधिक पुराना है, जिसने लोगों के सोचने, रहने और जीने के तरीके को गहराई से प्रभावित किया है।

सिनेमा का इतिहास और विकास

सिनेमा का सफर ब्लैक एंड व्हाइट मूक (साइलेंट) फिल्मों से शुरू होकर आज अत्याधुनिक वीएफएक्स (टथर) और 3डी तकनीक तक पहुँच गया है। मूक और सवाक दौर में भारत में सिनेमा की शुरुआत दादा साहब फाल्के ने 1913 में 'शराजा हरिश्चंद्र' फिल्म से की थी, जो एक मूक फिल्म थी। इसके बाद 1931 में अर्देशिर ईरानी ने पहली बोलती (सवाक) फिल्म 'शालम आरा' बनाई, जिसने भारतीय सिनेमा में संगीत और संवादों का जादू फूँक दिया। स्वर्ण युग (लवसकमद म्ति) 1950 और 1960 के दशक को भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग माना जाता है। इस दौर में राज कपूर, गुरु दत्त, बिमल रॉय और महबूब खान जैसे निर्देशकों ने 'श्मदर इंडिया', 'श्यासा' और 'शआवारा' जैसी कालजयी फिल्में बनाईं, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। आधुनिक युग आज सिनेमा पूरी तरह डिजिटल हो चुका है। तकनीकी रूप से 'शबाहुबली' और 'शआरआरआर' जैसी फिल्मों ने वैश्विक स्तर पर भारतीय सिनेमा का डंका बजाया है।



मनोरंजन और मानसिक राहत का साधन

सिनेमा का प्राथमिक और सबसे लोकप्रिय उद्देश्य मनोरंजन है। दिनभर की भागदौड़, तनाव और व्यस्त जीवनशैली के बीच सिनेमा लोगों को एक काल्पनिक लेकिन खूबसूरत दुनिया में ले जाता है। भावनाओं का रचन (ब्रॉडवे) फिल्मों दर्शकों को हंसाती हैं, रुलाती हैं, डराती हैं और उनमें देशप्रेम का जज्बा जगाती हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जहाँ लोग खुद को भूलकर पर्दे के किरदारों के साथ जुड़ जाते हैं। संगीत और नृत्य भारतीय सिनेमा में संगीत की एक विशेष भूमिका है। यहाँ के गीत-संगीत लोगों के सुख-दुख के साथी हैं, जो फिल्मों को और अधिक आकर्षक बनाते हैं।

समाज का दर्पण और बदलाव का माध्यम

सिनेमा और समाज का गहरा संबंध है। समाज में जो कुछ भी घटित होता है, सिनेमा उसे अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाता है, और कई बार सिनेमा की कहानियाँ समाज को बदलने का काम करती हैं। सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करने वाले श्रद्धा कन्या से लेकर 'शपथ', 'शर्पिक' और 'शआर्टिकल 15' जैसी फिल्मों ने जातिवाद, लैंगिक असमानता, और घरेलू हिंसा जैसे गंभीर मुद्दों पर समाज को सोचने पर मजबूर किया है। प्रेरणादायक जीवनियाँ

(ठपवचपबे)रु श्भाग मिल्खा भागश, श्दंगलश और श्एमएस धोनीश जैसी फिल्मों ने युवाओं को खेल और जीवन में संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। ज्ञान और जागरूकतारु श्थी इडियट्स ने देश की शिक्षा प्रणाली की कमियों को उजागर किया, तो श्टॉयलेटरु एक प्रेम कथाश और श्पैडमैनश जैसी फिल्मों ने स्वच्छता और स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील विषयों पर खुलकर बात की।

सिनेमा का आर्थिक और वैश्विक महत्व

सिनेमा आज एक बहुत बड़ा उद्योग (इंडस्ट्री) बन चुका है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका जुड़ी हुई है। रोजगार के अवसररु एक फिल्म के निर्माण में केवल अभिनेता और निर्देशक ही नहीं, बल्कि लेखक, कैमरामैन, स्पाॅट बॉय, कॉस्ट्यूम डिजाइनर, संगीतकार और तकनीकी विशेषज्ञों सहित सैकड़ों लोगों को रोजगार मिलता है। स्पाॅट पावर (वजि चूमत)रु सिनेमा किसी भी देश की संस्कृति को दुनिया के सामने रखने का सबसे बेहतरीन जरिया है। आज बॉलीवुड और दक्षिण भारतीय (साउथ) सिनेमा के दीवाने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि चीन, अमेरिका, रूस और मध्य पूर्व के देशों में भी हैं। यह भारत की सांस्कृतिक छवि को वैश्विक स्तर पर मजबूत करता है।

सिनेमा के नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ

सकारात्मक पहलुओं के बावजूद, सिनेमा के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी समाज, विशेषकर युवाओं पर पड़ रहे हैं। हिंसा और अश्लीलतारु आधुनिक सिनेमा और विशेष रूप से ओटीटी (ब्ज्ज) प्लेटफॉर्म पर बढ़ती हिंसा, गाली-गलौज और अश्लीलता युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रही है। कई बार लोग फिल्मों में दिखाए जाने वाले अपराधों के तरीकों को देखकर हकीकत में भी अपराध कर बैठते हैं। अवास्तविक दुनिया (न्दतमंस वतसक)रु फिल्में अक्सर एक

ऐसी चकाचौंध भरी दुनिया दिखाती हैं, जिसका हकीकत से कोई वास्ता नहीं होता। युवा अक्सर इस नकली लाइफस्टाइल की नकल करने की कोशिश में डिप्रेशन या गलत रास्तों पर चल पड़ते हैं। नशे का महिमामंडनरु कुछ फिल्मों में धूम्रपान और शराब के सेवन को श्कूलश या श्स्टाइलिश बनाकर पेश किया जाता है, जिससे किशोर वर्ग आसानी से प्रभावित हो जाता है।

नया दौर— ओटीटी (ब्ज्ज) और सिनेमाघरों का भविष्य

इंटरनेट के इस दौर में सिनेमा देखने का जरिया भी बदल गया है। नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम और जियो सिनेमा जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म ने सिनेमा को सीधे लोगों के मोबाइल और लिविंग रूम तक पहुँचा दिया है। कंटेंट की विविधतारु ओटीटी के आने से अब छोटे बजट की और बिना बड़े सितारों वाली फिल्मों को भी अपनी बात रखने का मौका मिल रहा है। कहानियों में नयापन आया है। थिएटर का क्रेजरु हालांकि ओटीटी का चलन बढ़ा है, लेकिन बड़े पर्दे पर (सिनेमा हॉल में) फिल्म देखने का जो सामूहिक अनुभव और थ्रिल होता है, उसे कभी कम नहीं किया जा सकता। यह एक दुधारी तलवार की तरह है। इसका उपयोग समाज को जागरूक और शिक्षित करने के लिए भी किया जा सकता है और यह समाज को गुमराह भी कर सकता है। फिल्म निर्माताओं की यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे केवल मुनाफे के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखकर फिल्मों का निर्माण करें। वहीं, दर्शकों के रूप में हमें भी यह समझना होगा कि पर्दे पर दिखने वाली हर चीज सच नहीं होती। हमें सिनेमा से केवल अच्छाइयों को ग्रहण करना चाहिए। यदि सही दृष्टिकोण से देखा जाए, तो सिनेमा मानव जाति को जोड़ने और समाज को बेहतर बनाने का एक बेहतरीन माध्यम बना रहेगा।



बिहार में धान की फसल

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना आजादी के समय था। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है, जहाँ की लगभग 70 से 80 प्रतिशत आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। राज्य के कुल खाद्यान्न उत्पादन में धान की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। यहाँ का मुख्य भोजन चावल है, इसलिए हर ग्रामीण परिवार के रसोईघर से लेकर खेतों की हरियाली तक, धान का एक विशेष महत्व है। उत्तर बिहार के बाढ़ के मैदानों से लेकर दक्षिण बिहार के मैदानी इलाकों तक, मानसून के आते ही खेतों में धान की रोपाई का उत्सव शुरू हो जाता है। धान यहाँ के लोगों की संस्कृति, अर्थव्यवस्था और जीवन की धड़कन है।

बिहार की भौगोलिक स्थिति और धान की अनुकूलता

बिहार की जलवायु और मिट्टी धान की खेती के लिए प्राकृतिक रूप से बेहद उपयुक्त मानी जाती है। उर्वरक मिट्टीरु गंगा, कोसी, गंडक, सोन और बूढ़ी गंडक जैसी नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी धान की फसल के लिए अत्यधिक उपजाऊ होती है। इस मिट्टी में नमी सोखने की क्षमता अधिक होती है। जलवायु और तापमानरु धान एक उष्णकटिबंधीय फसल है। इसके लिए 20 से 37 डिग्री सेल्सियस तापमान और उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है, जो बिहार की जलवायु में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। वर्षारु धान की खेती के लिए 100 से 150 सेंटीमीटर वर्षा की जरूरत होती

है। बिहार में जून से सितंबर के दौरान होने वाली दक्षिण-पश्चिम मानसून की बारिश धान की फसल का मुख्य आधार है।

बिहार में धान की फसल के प्रमुख प्रकार (मौसम के अनुसार)

बिहार में कृषि वैज्ञानिक और किसान मौसम के मिजाज को देखते हुए तीन अलग-अलग श्रेणियों में धान की खेती करते हैं—रूअगहनी धान (खरीफ) यह बिहार में धान की सबसे मुख्य और बड़े पैमाने पर की जाने वाली फसल है। इसकी बुआई जून-जुलाई में (मानसून के आगमन पर) की जाती है और कटाई नवंबर-दिसंबर (अघन के महीने) में होती है। राज्य का लगभग 85 से 90 प्रतिशत धान इसी मौसम में होता है। भदई धान यह कम समय में तैयार होने वाली फसल है। इसकी बुआई मई-जून में होती है और कटाई अगस्त-सितंबर (भादो के महीने) में कर ली जाती है। यह आम तौर पर ऊंचे इलाकों में बोई जाती है जहाँ पानी जमा नहीं होता। गरमा धान इसकी खेती उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ सिंचाई के पुरखा साधन (जैसे नलकूप) उपलब्ध होते हैं। इसकी रोपाई जनवरी-फरवरी के कड़ाके की ठंड के बाद होती है और कटाई मई-जून में गर्मियों के दौरान की जाती है।

प्रमुख धान उत्पादक जिले

बिहार के लगभग सभी जिलों में धान उगाया जाता है, लेकिन कुछ क्षेत्र इसके उत्पादन में अग्रणी हैं—रोहतास और कैमूर रोहतास को



बिहार का धान का कटोरा कहा जाता है। यहाँ सोन नहर प्रणाली के कारण सिंचाई की बेहतरीन सुविधा है, जिससे रिकॉर्ड उत्पादन होता है। अन्य प्रमुख जिले—भोजपुर, बक्सर, पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, कटिहार, पूर्णिया, बेगूसराय और नालंदा धान के अन्य बड़े उत्पादक केंद्र हैं।

धान की पारंपरिक बनाम आधुनिक खेती पद्धतियाँ

बिहार के किसान अब पारंपरिक तरीकों को छोड़कर वैज्ञानिक पद्धतियों को अपना रहे हैं—बिचड़ा (नर्सरी) तैयार करना सबसे पहले खेतों के एक छोटे हिस्से में धान के बीजों को सघन रूप से बोकर पौधे तैयार किए जाते हैं। कदो करना मुख्य खेत में पानी भरकर बैलों या ट्रैक्टर से मिट्टी को कीचड़ जैसा बनाया जाता है। रोपाई तैयार पौधों को उखाड़कर मुख्य खेत में हाथों से कतारों में रोपा जाता है। बिहार के गाँवों में रोपाई के समय महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले लोकगीत (जैसे कजरी और रोपनी के गीत) वातावरण को संगीतमय बना देते हैं। श्री विधिरु पिछले कुछ वर्षों में बिहार के नालंदा और अन्य जिलों के किसानों ने श्री विधि अपनाकर धान के उत्पादन में विश्व रिकॉर्ड बनाया है। इस विधि में कम पानी, कम बीज और कम लागत में दोगुनी पैदावार मिलती है।

बिहार के विशेष और सुगंधित धान

बिहार केवल सामान्य चावल ही नहीं, बल्कि अपनी खुशबूदार और अनूठी किस्मों के लिए भी प्रसिद्ध है—कतरनी चावल (भागलपुरधौका) भागलपुर का कतरनी चावल अपनी बेहतरीन खुशबू और स्वाद के लिए जाना जाता है। इसे भारत सरकार द्वारा भौगोलिक संकेतक (जीआई टैग) भी मिल चुका है। मर्चा चूड़ा (पश्चिमी चंपारण) पश्चिमी चंपारण के मर्चा धान (जो दिखने में काली मिर्च जैसा होता है) को भी

भौगोलिक संकेतक मिला है। इससे बनने वाला चूड़ा अत्यंत स्वादिष्ट और सुगंधित होता है। बासमती और अन्य किस्में रु राज्य के कई हिस्सों में कनकजीर, तुलसीमंजरी और बासमती जैसी पारंपरिक सुगंधित किस्में भी उगाई जाती हैं।

बिहार में धान की खेती की चुनौतियाँ और समस्याएं

प्रचुर संसाधनों के बावजूद बिहार के धान किसानों को कई बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बाढ़ और सूखा (दोहरी मार) रु बिहार का भूगोल अजीब है। उत्तर बिहार हर साल कोसी और गंडक की विनाशकारी बाढ़ से जूझता है, जिससे धान की फसल डूबकर सड़ जाती है। वहीं दूसरी ओर, दक्षिण बिहार का एक बड़ा हिस्सा सूखे की चपेट में रहता है, जिससे पानी के अभाव में फसल सूख जाती है। सिंचाई के साधनों की कमी रु आज भी बिहार के कई इलाकों के किसान पूरी तरह से मानसून की बारिश पर निर्भर हैं। बिजली और डीजल की बढ़ती कीमतों के कारण नलकूपों से सिंचाई करना महंगा साबित होता है। बाजार और बिचौलियों की समस्या रु सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किए जाने के बावजूद, प्राथमिक कृषि साख समितियों के माध्यम से समय पर खरीदारी न होने के कारण छोटे किसानों को अपना धान कम दामों पर स्थानीय व्यापारियों या बिचौलियों को बेचना पड़ता है। आधुनिक तकनीकों तक सीमित पहुँच रु छोटे और सीमांत किसानों के पास पूँजी की कमी होती है, जिससे वे महंगे उन्नत बीज, खाद और कटाई की आधुनिक मशीनों का लाभ नहीं उठा पाते। पलायन की समस्या रु गाँवों में कृषि के अलावे अन्य रोजगार के साधन न होने के कारण यहाँ के युवा काम की तलाश में बड़े पैमाने पर दूसरे राज्यों के शहरों की तरफ जा रहे हैं।

सरकारी प्रयास और समाधान



बिहार सरकार और कृषि विभाग धान की पैदावार बढ़ाने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए कई कदम उठा रहे हैं। रु कृषि रोड मैप रु कृषि क्षेत्र में तकनीकी सुधार लाने के लिए काम कर रहा है। अनुदान (सब्सिडी) रु किसानों को प्रमाणित बीजों, खाद, और आधुनिक कृषि यंत्रों (जैसे धान रोपने वाली मशीन) पर भारी सरकारी सहायता दी जा रही है। हर खेत तक पानी रु सरकार की योजनाओं के तहत छह खेत तक सिंचाई का पानी पहुँचाने की योजना पर काम चल रहा है, जिससे मानसून पर निर्भरता कम होगी।

उपसंहार

बिहार में धान की फसल केवल जीवनयापन का साधन नहीं, बल्कि यहाँ की लोक-संस्कृति की पहचान है। नए साल की शुरुआत पर बनने वाला शिवान्न (नए चावल की खीर) हो या चूड़ा-दही का त्योहार (मकर संक्रांति), धान हर उत्सव के केंद्र में है। यदि बिहार के किसानों को समय पर पानी, खाद, बिजली और उनके अनाज का सही मूल्य मिल जाए, तो बिहार न केवल खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर रहेगा, बल्कि पूरे देश की खाद्य सुरक्षा में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बन सकता है। धान की खेती को उन्नत बनाकर ही बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी जा सकती है।



राजनीतिक परिवर्तन का नया सूर्योदय

भारतीय राजनीति में पश्चिम बंगाल हमेशा से ही वैचारिक संघर्षों, तीखी राजनीतिक बहसों और बड़े बदलावों की भूमि रहा है। स्वतंत्रता के बाद से यहाँ के राजनीतिक परिदृश्य ने कई ऐतिहासिक मोड़ देखे हैं, लेकिन 2026 का पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव राज्य के इतिहास में सबसे बड़ा राजनीतिक उलटफेर लेकर आया। दशकों तक वामपंथी शासन और फिर पिछले 15 वर्षों से सत्ता पर काबिज अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (।।ज्) के वर्चस्व को चुनौती देते हुए भारतीय जनता पार्टी (।।श्र) ने पूर्ण बहुमत के साथ ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं था, बल्कि यह बंगाल के सामाजिक और राजनीतिक ताने-बाने में आए एक गहरे वैचारिक बदलाव का जीवंत दस्तावेज है, जो पत्र-पत्रिकाओं और राजनीतिक विश्लेषकों के लिए एक गंभीर अध्ययन का विषय बन चुका है।

चुनाव के मुख्य आंकड़े और ऐतिहासिक जनादेश

पश्चिम बंगाल की सभी 294 विधानसभा सीटों के लिए चुनाव आयोग ने दो मुख्य चरणों (23

अप्रैल और 29 अप्रैल 2026) में मतदान कराया। 4 मई 2026 को घोषित हुए चुनाव परिणामों ने पूरे देश को चौंका दिया— भारतीय जनता पार्टी राज्य में प्रचंड बहुमत हासिल करते हुए 207 सीटों पर ऐतिहासिक जीत दर्ज की और बंगाल की सत्ता के शिखर पर पहुँची। तृणमूल कांग्रेस (ज्) मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली निर्वर्तमान सत्ताधारी पार्टी सिमटकर मात्र 80 सीटों पर रह गई। यहाँ तक कि स्वयं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी अपनी पारंपरिक सीट से पराजय का सामना करना पड़ा। वाममोर्चा और कांग्रेस गठबंधन दशकों तक बंगाल पर राज करने वाला लेफ्ट-फ्रंट (वाममोर्चा) केवल 1 सीट पर सिमट गया, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को सिर्फ 2 सीटें प्राप्त हुईं। यह परिणाम साफ तौर पर दर्शाता है कि बंगाल की जनता ने त्रिशंकु विधानसभा या गठबंधन की राजनीति के बजाय एकतरफा और मजबूत सरकार के पक्ष में अपना मत दिया है।

इस महा-परिवर्तन के प्रमुख राजनैतिक कारण

पत्रिका के पाठकों और विश्लेषकों के लिए यह

समझना बेहद जरूरी है कि आखिर वह कौन से कारक थे जिन्होंने ममता बनर्जी के श्मभेद्य दुर्गेश को ढहा दिया। 1. सत्ता विरोधी लहर और जनता का आक्रोशकिरी भी सरकार के 15 साल के लंबे कार्यकाल के बाद स्वाभाविक रूप से एंटी-इन्कंबेंसी (सत्ता विरोधी लहर) काम करने लगती है। तृणमूल कांग्रेस के शासनकाल में स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार, जबरन वसूली (शकट-मनीश) और संदेशखाली जैसी घटनाओं के बाद महिलाओं व आम नागरिकों में उपजा आक्रोश इस चुनाव में मतपेटियों के जरिए बाहर आया। 2. श्मयश से श्मरोसाश का नैरेटिवबंगाल में चुनावी हिंसा और राजनीतिक डर का एक पुराना इतिहास रहा है। इस चुनाव में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने अपने पूरे अभियान को श्मय से श्मरोसाश के नारे के इर्द-गिर्द केंद्रित किया। चुनाव आयोग द्वारा केंद्रीय सुरक्षा बलों की व्यापक तैनाती और निष्पक्ष चुनाव के श्मरोसे ने मौन मतदाताओं (साइलेंट वोटर्स), विशेषकर महिलाओं को बिना किसी डर के मतदान करने का साहस दिया, जिससे मतदान का प्रतिशत रिकॉर्ड स्तर तक पहुँच गया। 3. ध्रुवीकरण और जमीनी स्तर पर संघ का कार्ययह जीत रातोंरात नहीं मिली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (ए) और भाजपा के कार्यकर्ताओं ने पिछले कई वर्षों से बंगाल के जिलों, कस्बों और मतुआ समुदाय जैसे विशिष्ट सामाजिक समूहों के बीच जमीनी स्तर पर गहरा काम किया था। रामनवमी और अन्य सांस्कृतिक प्रतीकों के जरिए बहुसंख्यक समाज में जो सांस्कृतिक चेतना जगाई गई, उसने चुनाव में एक मजबूत वोट बैंक का रूप ले लिया।

रिकॉर्ड मतदान— राष्ट्रवाद बनाम क्षेत्रीय अस्मिता

2026 के इस चुनाव की सबसे अनूठी विशेषता इसका रिकॉर्ड तोड़ मतदान प्रतिशत रहा। पहले चरण में करीब 91: और समग्र रूप से लगभग 93: तक पहुँचे मतदान ने यह साफ कर दिया था कि जनता बदलाव के लिए आतुर थी। तृणमूल कांग्रेस

ने पूरे चुनाव को श्मंगाली अस्मिताश और श्मबहरी बनाम भीतरीश के मुद्दे पर लड़ने का प्रयास किया। ममता बनर्जी ने खुद को श्मंगाल की बेटीश के रूप में पेश किया, लेकिन विपक्ष ने इस क्षेत्रीय कार्ड के सामने श्मकेंद्रीय विकास योजनाओं का लाभ न मिलनेश और श्मराष्ट्रीय मुख्यधारा से बंगाल के कटनेश के दावों को मजबूती से रखा। अंततः, जनता ने क्षेत्रीय भावनात्मकता के बजाय सुरक्षा, रोजगार और औद्योगिक विकास की आकांक्षाओं को प्राथमिकता दी।

वामपंथ का अंत और कांग्रेस का पतन

एक समय था जब ज्योति बसु के नेतृत्व में वामपंथ ने बंगाल पर 34 वर्षों तक एकछत्र राज किया था। लेकिन 2026 का यह चुनाव बंगाली राजनीति में वामपंथी विचारधारा के लगभग पूर्ण अवसान का गवाह बना है। कांग्रेस और वामपंथियों का पारंपरिक सेक्युलर वोट बैंक पूरी तरह से तृणमूल और भाजपा के बीच विभाजित हो गया।

भावी चुनौतियाँ और बंगाल का भविष्यइस ऐतिहासिक जनादेश के बाद बंगाल में एक दक्षिणपंथी विचारधारा वाली सरकार का गठन होने जा रहा है, जो अपने आप में एक अभूतपूर्व घटना है। हालांकि, नई सरकार के सामने चुनौतियों का पहाड़ खड़ा है। औद्योगिक पुनरुद्धाररू टाटा के सिंगूर छोड़ने के बाद से बंगाल में जो औद्योगिक शून्य पैदा हुआ था, उसे भरना और राज्य में नया निवेश लाना सबसे बड़ी चुनौती होगी। कानून-व्यवस्था चुनाव बाद होने वाली हिंसा को रोकना और राजनीतिक प्रतिशोध की संस्कृति को समाप्त कर राज्य में कानून का राज स्थापित करना पहली प्राथमिकता होगी। आर्थिक कर्ज की स्थितिरू राज्य पर बढ़े कर्ज के बोझ को संभालते हुए जनकल्याणकारी योजनाओं और ढांचागत विकास (इन्फ्रास्ट्रक्चर) के बीच संतुलन बनाना होगा।



शौर्य, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के अमर प्रतीक

स्वाभिमान की अमर गाथा

भारतीय इतिहास वीर-गाथाओं, त्याग और बलिदान की अनगिनत कहानियों से समृद्ध है। लेकिन जब भी बात मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने, महलों के ऐशो-आराम को त्याग कर जंगलों में घास की रोटियाँ खाने और शक्तिशाली साम्राज्य के सामने सिर न झुकाने की आती है, तो इतिहास के पन्नों पर मेवाड़ के वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का नाम सबसे स्वर्णिम अक्षरों में उभरता है। महाराणा प्रताप केवल एक राजा या कुशल योद्धा नहीं थे, बल्कि वे वीरता, अटूट प्रतिज्ञा, राष्ट्रभक्ति और अद्वितीय स्वाभिमान के साक्षात् प्रतीक थे। एक ऐसे दौर में जब भारत के बड़े-बड़े राजा और महाराजा मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार कर अपने राज्यों की रक्षा कर रहे थे, तब अकेले प्रताप ने अपनी मातृभूमि मेवाड़ की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मुगलों की विशाल सेना को नाकों चने चबवा दिए थे। उनका जीवन हर युग के मनुष्यों के लिए राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और गरिमा का सबसे बड़ा पाठ है।

जन्म, बचपन और प्रारंभिक जीवन

मेवाड़ के रक्षक महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 (ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया) को राजस्थान के कुम्भलगढ़ दुर्ग में हुआ था। उनके पिता मेवाड़ के शासक महाराणा उदयसिंह द्वितीय थे और उनकी माता का नाम रानी जीवंत कंवर (जयवंता बाई) था, जो पाली के सोनगरा चौहान अखैराज की पुत्री थीं। बचपन में प्रताप को उनके माता-पिता और प्रजा प्यार से शकीकाश कहकर पुकारते थे। प्रताप का बचपन राजपूताना की शौर्यमयी परंपराओं के बीच बीता। उनकी माता जयवंता बाई ने उन्हें बचपन से ही वीरता, धर्म और मातृभूमि के प्रति सर्वस्व अर्पण करने के संस्कार दिए। बचपन से ही प्रताप असाधारण रूप से बलशाली, साहसी और न्यायप्रिय थे। उन्होंने अस्त्र-शस्त्र के संचालन के साथ-साथ कूटनीति और युद्ध कौशल की शिक्षा बहुत कम उम्र में ही प्राप्त कर ली थी। वे अक्सर महलों के आराम को छोड़कर अरावली की पहाड़ियों में रहने वाले आदिवासी भीलों के साथ समय बिताते थे, जिससे उनके मन में आम जनता और भीलों के प्रति गहरा प्रेम पैदा हुआ। यही भील

आगे चलकर मुगलों के खिलाफ युद्ध में प्रताप की सबसे बड़ी ताकत बने।

सिंहासनारोहण और विकट परिस्थितियाँ

सन 1572 में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद मेवाड़ के इतिहास में एक नया मोड़ आया। उदयसिंह ने अपनी प्रिय रानी धीरबाई के प्रभाव में आकर अपने छोटे पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। लेकिन जगमाल अयोग्य और विलासी था, जबकि मेवाड़ की प्रजा और सामंत (सरदार) वीर प्रताप को राजा के रूप में देखना चाहते थे। मेवाड़ के कृष्णदास चूड़ावत, ग्वालियर के राजा रामशाह तोमर और अन्य सरदारों ने जगमाल के अयोग्य निर्णय को बदलते हुए 1 मार्च 1572 को गोगुंदा में महाराणा प्रताप का राजतिलक किया। जब प्रताप मेवाड़ के शासक बने, तो स्थिति अत्यंत विकट थी। चित्तौड़गढ़ का ऐतिहासिक किला मुगलों के कब्जे में था और मेवाड़ आर्थिक व सैन्य रूप से कमजोर हो चुका था। प्रताप के सामने दो विकल्प थे—पहला, वे भी अन्य राजाओं की तरह अकबर की अधीनता स्वीकार कर लें और महलों में सुख से रहें; दूसरा, स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मुगलों से सीधा संघर्ष मोल लें। प्रताप ने बिना किसी हिचकिचाहट के संघर्ष का कठिन मार्ग चुना। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि कृष्णदास सहित पूरे मेवाड़ को स्वतंत्र नहीं करा लूंगा, तब तक न तो थाली में भोजन करूंगा, न ही शय्या (पलंग) पर सोऊंगा। मैं पत्तलों पर भोजन करूंगा और घास के बिछौने पर सोऊंगा।¹⁸

अकबर की विस्तारवादी नीति और कूटनीति की असफलता

मुगल सम्राट अकबर पूरे भारत पर एकछत्र राज करना चाहता था। वह जानता था कि बिना मेवाड़ को झुकाए राजपूताना पर उसका नियंत्रण अधूरा है। लेकिन अकबर प्रताप की वीरता और उनके स्वाभिमान से भी परिचित था, इसलिए वह युद्ध के

बिना ही कूटनीति से प्रताप को अपने अधीन करना चाहता था। इसके लिए अकबर ने 1572 से 1576 के बीच महाराणा प्रताप के पास चार शांति दूत (शिष्टमंडल) भेजे—रुजाल खान कोरवी (नवंबर 1572) प्रथम प्रयास के रूप में अकबर ने अपने चतुर दरबारी को भेजा। कुंवर मानसिंह (जून 1573) आमेर के राजकुमार मानसिंह को भेजा गया, लेकिन प्रताप ने मर्यादापूर्वक अधीनता के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। राजा भगवंत दास (सितंबर 1573) मानसिंह के पिता ने भी प्रताप को समझाने की कोशिश की। टोडरमल (दिसंबर 1573) अकबर के वित्त मंत्री टोडरमल भी प्रताप के इरादों को हिला नहीं पाए। महाराणा प्रताप ने हर बार स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेवाड़ हमेशा स्वतंत्र रहा है और रहेगा, वे किसी भी विदेशी शासक की गुलामी स्वीकार नहीं करेंगे।

हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध (1576)

18 जून 1576 का दिन भारतीय इतिहास का सबसे भयानक और गौरवशाली दिन माना जाता है। राजस्थान की अरावली पहाड़ियों के बीच स्थित हल्दीघाटी के तंग दर्रे में महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के बीच महासंग्राम शुरू हुआ। मुगलों की सेना का नेतृत्व आमेर के राजा मानसिंह और आसफ खान कर रहे थे, जिनके पास लगभग 80,000 की विशाल और आधुनिक सेना थी। इसके विपरीत, महाराणा प्रताप के पास मात्र 20,000 सैनिक थे, जिनमें राजपूतों के साथ-साथ हकीम खान सूरी के नेतृत्व में अफगान सैनिक और राणा पूंजा के नेतृत्व में धनुर्धारी भील योद्धा शामिल थे। हल्दीघाटी का युद्ध बेहद भीषण था। प्रताप के सैनिकों ने मुगलों पर ऐसा भयंकर प्रहार किया कि मुगलों के पैर उखड़ गए। युद्ध के मैदान में महाराणा प्रताप स्वयं अपने प्रिय घोड़े चेतक पर सवार होकर शत्रु सेना को गाजर-मूली की तरह काट रहे थे। प्रताप का मुख्य लक्ष्य मानसिंह था। चेतक ने हवा से बातें करते हुए अपने दोनों पैर मानसिंह के हाथी के मस्तक पर टिका दिए। प्रताप

ने अपने भाले से मानसिंह पर सीधा प्रहार किया, लेकिन मानसिंह हौदे में छिप गया और उसका महावत मारा गया। इसी दौरान हाथी की सूंड में बंधी दुधारी तलवार से चेतक का एक पैर गंभीर रूप से जखमी हो गया। प्रताप को चारों तरफ से मुगल सेना से घिरा देख मेवाड़ के वीर सरदार झाला मानसिंह (झाला मन्ना) ने प्रताप का राजमुकुट स्वयं पहन लिया और प्रताप को युद्ध भूमि से सुरक्षित बाहर जाने का आग्रह किया। मुगलों ने झाला मन्ना को ही प्रताप समझकर उन पर हमला कर दिया और वे वीरगति को प्राप्त हुए। इस प्रकार हल्दीघाटी के युद्ध में न तो अकबर जीत सका और न ही प्रताप हारे; मुगलों की विशाल सेना भी प्रताप को बंदी बनाने या झुकाने में पूरी तरह असफल रही।

स्वामीभक्त घोड़ा श्वेतकश और वीर हाथी रामप्रसाद

महाराणा प्रताप के इतिहास की बात उनके वफादार पशुओं के बिना अधूरी है। उनके नीले रंग के काठियावाड़ी घोड़े श्वेतकश की वफादारी आज भी मिसाल दी जाती है। हल्दीघाटी के युद्ध में पैर कट जाने के बावजूद, चेतक अपने स्वामी प्रताप को मुगलों से बचाते हुए युद्ध भूमि से दूर ले गया। रास्ते में पड़े एक 26 फीट चौड़े बरसाती नाले को चेतक ने एक ही छलांग में पार कर लिया, जिसे मुगल घुड़सवार पार नहीं कर पाए। नाला पार करने के तुरंत बाद चेतक ने प्रताप की गोद में अपने प्राण त्याग दिए। प्रताप अपने इस मूक मित्र की मृत्यु पर फूट-फूट कर रोए थे। इसी प्रकार प्रताप का प्रिय हाथी शरामप्रसाद भी अद्वितीय था। उसने युद्ध में अकेले ही मुगलों के कई हाथियों को मार गिराया था। बाद में मुगलों ने उसे बंदी बना लिया। अकबर ने उसका नाम बदलकर श्पीरप्रसाद रख दिया। लेकिन उस देशभक्त हाथी ने मुगलों का दिया हुआ अन्न और पानी स्वीकार नहीं किया और 18 दिनों तक भूखा-प्यासा रहकर अपने प्राण त्याग दिए।



अकबर ने स्वयं कहा था कि कृष्णस राणा के हाथी को मैं अपने सामने नहीं झुका पाया, उस राणा को मैं कैसे झुका सकूँगा!६

जंगलों का जीवन और भामाशाह का महान त्याग

हल्दीघाटी के युद्ध के बाद मुगलों ने कुम्भलगढ़, गोगुंदा और उदयपुर पर अधिकार कर लिया। प्रताप के पास न तो किला बचा था और ना ही सेना के भरण-पोषण के लिए धन। वे अपनी रानी अजमादे पंवार और बच्चों के साथ अरावली के जंगलों में भटकने को मजबूर हुए। यह समय प्रताप के जीवन का सबसे कठिन दौर था। कई बार परिवार को भूखा रहना पड़ता था। एक प्रसिद्ध लोककथा के अनुसार, जब जंगली घास की रोटियां बनाई गईं, तो एक जंगली बिल्ली ने उनके भूखे बच्चे अमरसिंह के हाथ से वह रोटी भी छीन ली। बच्चे की चीख सुनकर प्रताप का हृदय द्रवित हो उठा, लेकिन उनका स्वाभिमान टस से मस नहीं हुआ। इसी विकट परिस्थिति में मेवाड़ के

दानवीर मंत्री भामाशाह प्रताप के पास पहुँचे। भामाशाह ने अपनी पीढ़ियों की संचित अपार संपत्ति (25 लाख रुपये और 20 हजार अशर्फियाँ) महाराणा प्रताप के चरणों में अर्पित कर दी। यह धन इतना अधिक था कि इससे 25,000 सैनिकों का खर्च अगले 12 वर्षों तक आसानी से उठाया जा सकता था। भामाशाह के इस महान त्याग ने प्रताप की सेना में नए प्राण फूंक दिए।

दिवेर का युद्ध और मेवाड़ का पुनरुद्धार (1582)

भामाशाह से मिले धन की सहायता से महाराणा प्रताप ने एक नई और शक्तिशाली सेना का गठन किया। सन 1582 में विजयादशमी के दिन श्दिवेर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में महाराणा प्रताप और उनके पराक्रमी पुत्र अमरसिंह ने मुगल चौकियों पर भीषण आक्रमण किया। अमरसिंह ने मुगल सेनापति सुल्तान खान पर अपने भाले से ऐसा जोरदार प्रहार किया कि भाला सुल्तान खान और उसके घोड़े को चीरता हुआ जमीन में धंस गया। दिवेर के युद्ध को कर्नल जेम्स टॉड ने प्लेवाड़ का मैराथन कहा है। इस युद्ध में प्रताप ने मुगलों को बुरी तरह परास्त किया और देखते ही देखते मुगलों की 36 चौकियों को उखाड़ फेंका। इसके बाद प्रताप ने कुम्भलगढ़, गोगुंदा और चित्तौड़गढ़ व मांडलगढ़ को छोड़कर पूरे मेवाड़ पर पुनः विजय पताका फहरा दी। उन्होंने श्चावंडश को अपनी नई राजधानी बनाया और वहाँ कला, संस्कृति और विकास को बढ़ावा दिया।

महाप्रयाण और अकबर की आंखों में आंसू

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में महाराणा प्रताप ने चावंड में रहकर प्रजा की भलाई के काम किए। अपनी मातृभूमि को लगभग पूरी तरह आजाद कराने के बाद, 19 जनवरी 1597 को चावंड के जंगलों में एक शेर के शिकार के दौरान धनुष की प्रत्यंचा खींचते समय लगी गंभीर चोट के कारण

इस महान योद्धा का निधन हो गया। मृत्यु के समय उनकी उम्र मात्र 57 वर्ष थी। महाराणा प्रताप की मृत्यु का समाचार जब मुगल दरबार में पहुँचा, तो वहाँ सन्नाटा छा गया। इतिहासकार बताते हैं कि प्रताप की मृत्यु की खबर सुनकर अकबर की आँखों में भी आंसू आ गए थे। अकबर के दरबारी कवि श्दुरसा आढ़ाश ने मुगल दरबार में प्रताप की प्रशंसा में कविता पढ़ी कि कृष्ण प्रताप! तुमने कभी अपने घोड़े को मुगलों के दाग से नहीं दगवाया, अपनी पगड़ी को किसी के सामने नहीं झुकाया और अपनी मातृभूमि को आजाद रखा। तुम्हारी मृत्यु पर स्वयं सम्राट ने अपनी जीभ दांतों तले दबा ली और उसकी आंखों से आंसू निकल पड़े। यह एक सच्चे शत्रु की तरफ से एक महान योद्धा को दी गई सबसे बड़ी श्रद्धांजलि थी।

उपसंहाररू शाश्वत प्रेरणा के पुंज महाराणा प्रताप केवल एक ऐतिहासिक चरित्र नहीं हैं, बल्कि वे जीवित आदर्श हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विपरीत क्यों न हों, यदि मन में दृढ़ संकल्प, मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम और अपने सिद्धांतों के प्रति निष्ठा हो, तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको हरा नहीं सकती। वे जात-पात और धर्म से ऊपर उठकर एक ऐसे समावेशी राजा थे, जिनकी सेना का सेनापति एक मुस्लिम (हकीम खान सूरी) था और सेना की रीढ़ की हड्डी आदिवासी भील समाज था। आज सदियों बीत जाने के बाद भी महाराणा प्रताप का नाम हर भारतीय के हृदय में गर्व और देशभक्ति की भावना भर देता है। हल्दीघाटी की माटी आज भी उनके शौर्य की गवाही देती है। जब तक दुनिया में स्वाभिमान, स्वतंत्रता और राष्ट्रभक्ति की कद्र रहेगी, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का नाम आसमान में ध्रुवतारे की तरह चमकता रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दिखाता रहेगा।

जुलाई 2026 की मुख्य बातें और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम

राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता
जुलाई 2026 की शुरुआत में ही केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में रक्षा अधिग्रहण परिषद ने लगभग 52,000 हजार करोड़ के सैन्य खरीद प्रस्तावों को मंजूरी दी है। इसके तहत भारतीय सेनाओं की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए मानवरहित विमान विरोधी इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम श्वाकाश तरंगश, एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल और जेट-आधारित कामिकेज ड्रोन जैसी स्वदेशी तकनीकों को शामिल किया गया है। इसके साथ ही, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन को श्वित्तीय शक्तियों का प्रतिनिधिमंडल (DFP&2026) ढांचा जारी कर अधिक वित्तीय स्वायत्तता दी गई है, जिससे नए शोध कार्यों में तेजी आएगी।

भारत-जापान ऐतिहासिक रणनीतिक रक्षा समझौता

कूटनीतिक मोर्चे पर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जापान की प्रधानमंत्री सनाए ताकाइची के बीच द्विपक्षीय वार्ता के बाद भारत और जापान ने एक ऐतिहासिक रक्षा समझौते का अनावरण किया है। इस नई पहल के अंतर्गत दोनों देश मिलकर आधुनिक सैन्य हार्डवेयर और रक्षा उपकरणों का सह-विकास करेंगे। यह आर्थिक और तकनीकी साझेदारी एशिया-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा और व्यापारिक संतुलन के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

ग्रामीण भारत के लिए ऐतिहासिक वित्तीय पैकेज

भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए श्विकसित भारत - ग्रामीण रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन को देशव्यापी स्तर पर लॉन्च किया है। इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए सरकार ने अगले 5 वर्षों की अवधि में ₹7.5 लाख करोड़ का भारी-भरकम वित्तीय आवंटन करने की घोषणा की है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को व्यापक मजबूती मिलेगी। इसके अलावा, भारत की कृषि क्रांति का आधार रही प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई

योजना ने भी सफलतापूर्वक अपने 10 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

स्वदेशी और अत्याधुनिक तकनीकों का विकास

विज्ञान और अनुसंधान क्षेत्र में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) दिल्ली ने क्क् और एक घरेलू स्टार्टअप के साथ मिलकर भारत का पहला स्वदेशी सामरिक एरोस्टेट (Tactical Aerostat) विकसित करने में सफलता पाई है। यह एक बैलून-आधारित हाई-अल्टीट्यूड प्लेटफॉर्म है जो लगभग 20 किलोमीटर के दायरे में निरंतर निगरानी और आपातकालीन संचार बनाए रखने में सक्षम है। यह ड्रोन तकनीक की तुलना में अधिक समय तक टिकने और आपदा प्रबंधन में सटीक सहायता देने के लिए तैयार किया गया है।

प्रमुख राष्ट्रीय दिवस, सांस्कृतिक उत्सव और खगोलीय घटनाएं

महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दिवस— इस महीने पूरा देश 1 जुलाई को राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस व जीएसटी दिवस, 22 जुलाई को राष्ट्रीय ध्वज अंगीकरण दिवस और 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के रूप में मना रहा है।

सांस्कृतिक पर्व— जुलाई के मध्य में ओडिशा के पुरी में विश्व प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा का आयोजन हो रहा है, वहीं महीने के अंत में श्गुरु पूर्णिमा का पावन उत्सव मनाया जाएगा।

खगोलीय घटनाक्रम— इस महीने खगोल प्रेमियों के लिए आकाश में शानदार नजारे दिख रहे हैं, जिसमें जुड़वां उल्कापिंडों की बौछार और सूर्य की परिक्रमा कर रहे धूमकेतु 10 की वापसी शामिल है, जिसे दूरबीन की मदद से साफ देखा जा सकता है।

डाक टिकट	पता